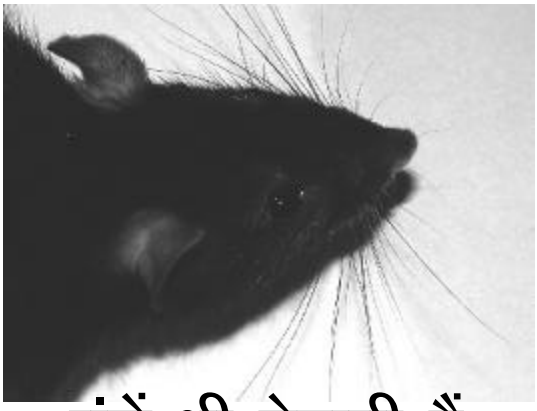

मूंछें भी देखती हैं

किन्ही कारणों से जब कोई इंसान अंधा हो जाता है, तो देखने में यह आया है कि मस्तिष्क का वह हिस्सा अन्य कामों में उपयोग होने लगता है। यानी मस्तिषक का जो हिस्सा सामान्यतः दृष्टि प्रक्रिया के लिए ज़िम्मेदार है उसको अन्य संवेदी अंगों से जोड़ दिया जाता है। शायद इसीलिए दृष्टिहीन व्यक्तियों के अन्य संवेदी अंग ज़्यादा पैने हो जाते हैं। अब यह पता चला है कि चूहों के अन्य शारीरिक अंग भी ऐसी स्थिति में स्वयं अनुकूलित हो जाते हैं।

नेशनल ऑटोनामस युनवर्सिटी ऑफ मैक्सिको, मैक्सिको सिटी के गैब्रियल गुटिएरेज़ और उनके सहकर्मियों ने 6 महीने की उम्र के चूहे लिए। इनमें कुछ चूहे नेत्रहीन थे और बाकी आंख वाले थे। शोधकर्ताओं ने इनकी मूंछों की गद्दी (व्हिस्कर पैड) का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि अंधे चूहों में व्हिस्कर पैड में ऊर्जा का उपयोग बड़ी सावधानी व कार्यक्षमता से किया जाता है और इनके द्वारा उत्पन्न विद्युत क्षेत्र भी काफी अलग ढंग का होता है।

प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़ में प्रकाशित इस परिणाम से लगता है कि इस प्रकार से इन चूहों की मूंछें कहीं अधिक संवेदी हो जाती हैं। इसके परिणास्वरुप ये चूहे छूकर खोजबीन करने में सामान्य से अधिक सक्षम हो जाते हैं।

इस अनुसंधान से इस बात की पुष्टि होती है कि अंधत्व के कारण सिर्फ मस्तिष्क का ही नहीं बल्कि पूरे शरीर का नए ढंग से पुनर्गठन होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***